होरी खेलनि संत, सामी सारंगधर सां,
लाए रंगु रहति जो, ग़ाइनि अनभइ छंत,
माधो ऐं ऊधो मिली, पसनि महबती महंत,
पुछनि अलेपु अचिंत, वाटां सुख सरूप जूं.

महाकवि सामीजी एक आध्यात्मिक दृश्य का शब्द-चित्र प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि संतजन शारंगधर (श्रीकृष्ण भगवान) के साथ होली खेल रहे हैं। वे अपनी सूधी (सीधी, सरल, ऋजु) चाल (आचरण) रूप रंग लगा कर ईश्वरीय ज्ञान की अनुभूति के छंद गा रहे हैं। माधव (श्रीकृष्ण) और उद्धव मिल कर ऐसे प्रेमी संत-महंतों को देख रहे हैं, जो निश्चिंत, निर्लिप्त होकर अपने स्वरूप (परमात्मा) के सुख के मार्ग पूछ रहे हैं।

रंगों का त्यौहार है होली। आनंद का उत्सव है होली। मुक्त-मन का नृत्य है होली! होली उमंग और उल्लास का सुंदर उत्सव है। संतजन भी होली खेलते हैं- अपने शिष्यों के साथ और परमेश्वर के साथ भी शारंगधर/श्रीविष्णु भगवान के साथ होली खेलते समय संत-जन प्रेम के रंग में रंग जाते हैं। लाल गुलाल से लाल हो जाते हैं। पिचकारियों के रंगों से सराबोर हो जाते हैं, आनंदमय बन जाते हैं, जिन्होंने हृदय में प्रभु के दर्शन किये हैं, उन संतों को ही अलौकिक आनंद मनाने का अवसर मिलता है।

सामी साहब ऐसे ही परम आनंदमय प्रसंग का वर्णन करते हैं, जहाँ सच्चे संत, साक्षात्कारी संत भगवान श्रीकृष्ण के साथ मिलकर होली खेल रहे हैं, आनंदोत्सव मना रहे हैं। भगवान और भक्तों की यह होली मानो सायुज्य भक्ति का चित्रण है। अभेद आनंद के साथ मिलकर एक हो जाना सायुज्य है जहाँ जीव की आत्मा ब्रह्म परमात्मा से मिल कर एक हो जाती है। सामीजी द्वारा वर्णित इस दृश्य में भगवान अपने भक्तों के साथ मिलकर होली खेल रहे हैं। श्रीकृष्ण एवं उनके प्रिय मित्र/भक्त उद्धव मिलकर प्यारे संत-महंतों एवं प्रेमीजनों को प्रेम से देख रहे हैं। सभी संत जन निर्लेप निश्चिंत होकर परमेश्वर के सुख का मार्ग पूछ रहे हैं कि अधिक ब्रह्मानंद कैसे प्राप्त हो सकेगा? शुद्ध भक्ति करते हुए सच्चा साधक सहज समाधि द्वारा सत्यलोक का सुख और आनंद भी अनुभव कर सकता है, जिस में परम पुरुष द्वारा जीवरूपी प्रियतमा से होली खेल रहा है, आनंदोत्सव मना रहा है। दोनों एक दूसरे के मिलन का आनंद अनुभव करते रहते हैं।

■